प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय, प्रयागराज
संस्कृत विभाग के अंतर्गत संचलित डिप्लोमा पाठ्यक्रम
एकवर्षीय पाठ्यक्रम : कर्मकाण्ड में डिप्लोमा (Diploma in Karmakand)
(Session- 2024-25 Onwards)
अर्हता – इण्टरमीडिएट उतीर्ण

प्रस्तावना - योऽनुचानः स नो महान् इति श्रुति वचन के अनुसार ऋचाओं का अनुशीलन करनेवाला मनुष्य महान् बनता है तथा यो जागार तम् ऋचः कामयन्ते अर्थात् जो मनुष्य नित्य ज्ञान प्राप्ति के लिये पिपासु रहता है, ऋचायें भी उसके अभ्युदय की कामना करती हैं। ज्ञान और संस्कार व्यक्ति को साधारण से असाधारण, सामान्य से विशेष, मनुष्य से महामानव, अल्पज्ञ से सर्वज्ञ, अज्ञानी से ज्ञानी और सुसंस्कृत बनाने के लिये अभिप्रेरित करते हैं। ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः इति औपनिषदिक मंत्र के अनुसार ज्ञान और संस्कार प्रत्येक भारतीय के लिये आवश्यक है। आज वैश्विक पटल पर मानवजनित अनेक समस्यायें दृष्टिगोचर होती हैं। आतङ्कवाद, अलगाववाद, नक्सलवाद जैसी अति सङ्कुचित विचारधारायें सम्पूर्ण विश्व, प्रकृति के सौन्दर्य एवं उसकी अपरिमितता को नश्वरशील बनाने हेतु उद्यत होकर नर्तन करती हुई अनुभूतिगम्य हो रहीं हैं। इन्हीं विचारधाराओं से मनुष्य एवं प्रकृति को सुरक्षित रखने के लिये वर्तमान में वैदिक ज्ञान एवं श्रौत साहित्य में वर्णित संस्कार अति प्रासङ्गिक परिलक्षित हो रहे हैं। यूनेस्को के समक्ष जो वैदिक वाङ्मय को रखा गया तो महामनीषियों ने यह बात अत्यन्त उन्मुक्त कण्ठ से स्वीकार की। सम्पूर्ण विश्व एवं मानव-जाति के लिये वैदिक वाङ्मय एवं उसमें प्रतिपादित ज्ञान आनेवाली पीढ़ियों के लिये सुरक्षित रखना आवश्यक है। चूँकि इस प्रकार का ज्ञान सम्पूर्ण मानव जाति के लिये दुर्लभ है। यह भी हम नहीं कह सकते कि आगामी पीढ़ी इस अपौरुषेय अथवा पौरुषेय वैदिक वाङ्मय का पुनः सर्जन करने में सशक्त हो सकेगी। अतः वैदिक वाङ्मय को अन्ताराष्ट्रिय धरोहर के रूप में सुरक्षित किया गया है। 2008 में उक्त संस्था ने Global Heritage का उद्घोष कर इस बात पर बल दिया कि इस ज्ञान व संस्कार से मानव-समाज एवं बालकों को संस्कारित करना बहुत आवश्यक है। भावी पीढ़ियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उन्हें अपने ज्ञान और संस्कारों को अपनाकर तदनुसार आचरण करने के लिये एवं राष्ट्र, समाज, परिवेश को सुसभ्य, सुसंस्कृतनिष्ठ, निःश्रेयस् प्राप्ति हेतु प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय, प्रयागराज, संस्कृत विभाग के माध्यम से एकवर्षीय प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम के सञ्चालन का निर्णय किया गया है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से श्रौत एवं स्मार्त परम्परा, पूजन-पद्धति, जप-पाठ विधि, यज्ञ-विधि, प्रस्थानत्रयी (उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र व श्रीमद्भगवद्गीता) तथा वेदान्तविद्या के सभी प्रस्थानों जैसे- अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, द्वैतवाद, अचिन्त्य-भेदाभेद, शक्तिविशिष्टाद्वैतवाद, शैवविशिष्टाद्वैतवाद, अविभागाद्वैतवाद, स्वरूपाद्वैतवाद, भेदाभेदवाद के सारतम अंश का एवं षोडश संस्कारों के शास्त्रीय पद्धति के अनुसार अध्यापन कराना इस प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम का प्रकृष्ट ध्येय है।

उद्देश्य -

- **विद्यार्थी भारतीय पारम्परिक कर्मकाण्ड एवं सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित होंगे।**
- **नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान विधि को जानकर जीवन को नियमबद्ध एवं आचरणशील बनाने में समर्थ होंगे।**
- **भारतीय कर्मकाण्ड के प्रामाणिक शास्त्रीय रूप से परिचित होकर उसकी व्यवहारिक उपयोगिता जानने योग्य बनेंगे।**
- **सामान्य अनुष्ठान सम्पन्न कराने योग्य कुशल और पौरोहित्य कर्म विशारद बनेंगे।**
- **आत्मनिर्भर भारत की सङ्कल्पना को साकार करने में सक्षम एवं आत्मनिर्भर बनेंगे।**

इस पाठ्यक्रम से सम्बन्धित प्रमुख बिन्दु इस प्रकार हैं-

- यह पाठ्यक्रम एकवर्षीय होगा तथा सेमस्टर एवं क्रेडिट-ग्रेडिंग प्रणाली पर आधारित होगा।
- इस पाठ्यक्रम में कुल पाँच प्रश्नपत्र होंगे। जिनमें चार प्रश्नपत्र सैद्धान्तिक (Theoretical) तथा पाँचवां प्रश्नपत्र प्रायोगिक (Practical) होगा।
- प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंकों का होगा। जिसमें 25 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन एवं 75 अंकों का बाह्य मूल्यांकन होगा।
- आन्तरिक मूल्यांकन तीन सत्रों में होगा, जिसमें कम से कम दो टेस्ट में उपस्थित होना अनिवार्य होगा।

पाठ्यक्रम का स्वरूप

Course Code		Course Title	Credits	CIE	ETE
A	B	C	D	E	F
		Semester I			
P020101T	Core	**प्रथम प्रश्नपत्र – पूजन पद्धति** ईकाई 1 – कर्मकाण्ड एवं पौरोहित्य का सामान्य परिचय, कर्मकाण्ड एवं पौरोहित्य का उद्भव एवं विकास, नित्यविधि - प्रातरुत्थान, स्नान, सन्ध्या, तर्पण तथा पञ्चयज्ञ, पूजन पद्धति क्रम, पवित्रीकरण, तिलकधारण,आचमन, शिखा बन्धन, ग्रन्थिबन्धन ईकाई 2 - स्वस्तिवाचन – शान्तिपाठ, देवतार्थ नमस्कार, सङ्कल्प, गौरी-गणेश पूजन ईकाई 3 - भूमि पूजन, दिक्शुद्धि, दीप पूजन शंख पूजन, घण्टा पूजन ईकाई 4 – शान्तिपाठ, पुरुषसूक्त, वरुणकलशस्थापन, नवग्रहमन्त्र, पञ्चोपचार, दशोपचार एवं षोडशोपचारपूजनविधि ईकाई 5 – रुद्राभिषेक, महामृत्युञ्जय जप, नवचण्डी विधान, अर्घ्य विचार **सहायक ग्रन्थ** ➢ नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीताप्रेस गोरखपुर ➢ दुर्गार्चन पद्धति, शिवदत्त मिश्र शास्त्री, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी ➢ यज्ञ मन्त्र संग्रह, शारदा इण्टरप्राइजेज, वाराणसी ➢ पौरोहित्यकर्मप्रशिक्षक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान	5	25	75
P020102T	Core	**द्वितीय प्रश्नपत्र – विशिष्ट देवपूजन एवं स्तोत्र** ईकाई 1 - गणपति पूजन, मण्डलमातृकापूजन, सप्तघृतमातृकापूजन, नवग्रहदेवतापूजन, असंख्यातरुद्रकलशपूजन ईकाई 2 - कलशस्थापन विधि, नवग्रह स्तोत्र, नवग्रह शान्ति, मूलगण्डान्तशान्ति दुःस्वप्नशान्ति ईकाई 3 – वैधव्योपशान्ति, गणपति अथर्वशीर्ष पाठ, श्रीसूक्त पाठ, कनकधारा स्तोत्र ईकाई 4 – सत्यनारायण पूजन, देवपूजन में त्याज्य एवं ग्राह्य सामग्री परिज्ञान, विष्णुयज्ञ, चण्डीयज्ञ, सोमयाग एवं सभी यागों का परिचय एवं प्रयोजन ईकाई 5 - श्राद्ध कर्म, यज्ञकर्म, व्रत उपवास निर्णय, गृहारम्भ, गृहप्रवेश **सहायक ग्रन्थ** ➢ नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीताप्रेस गोरखपुर ➢ दुर्गार्चन पद्धति, शिवदत्त मिश्र शास्त्री, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी ➢ यज्ञ मन्त्र संग्रह, शारदा इण्टरप्राइजेज, वाराणसी ➢ पौरोहित्यकर्मप्रशिक्षक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान ➢ बृहत्स्तोत्ररत्नाकर, गीताप्रेस गोरखपुर	5	25	75
		Semester II			
P020201T	Core	**तृतीय प्रश्नपत्र - ज्योतिषशास्त्र का सामान्य परिचय एवं हवनविधि** ईकाई 1 – ज्योतिषशास्त्र का सामान्य परिचय, सन्ध्योपासनविधि, तर्पणविधि, पञ्चाङ्ग का अभिज्ञान, ग्रहों का सामान्य परिचय ईकाई 2 – नक्षत्र, तिथि, वार, योग, करण, राशि, अग्निवास, शिववास, आहुतशुद्धि ईकाई 3 – कुण्डलीनिर्माण एवं फलादेश, हवनविधि, यज्ञयन्त्रपरिचय, होमद्रव्य ईकाई 4 – यज्ञीयसामग्री, पंचभू संस्कार, कुशकण्डिकाकरण ईकाई 5 - विविध मन्त्रों का जप, अनुष्ठान आदि, कुशकण्डिका विधि - मण्डप कुण्ड निर्माण	5	25	75

		एवं होम विधि **सहायक ग्रन्थ** ➢ मुहूर्तचिन्तामणि, श्रीकृष्णदास प्रकाशन, वाराणसी ➢ ताजिकनीलकण्ठी, सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ➢ लघु-पराशरी- सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी ➢ मध्य पराशरी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी ➢ नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीताप्रेस गोरखपुर ➢ दुर्गार्चन पद्धति, शिवदत्त मिश्र शास्त्री, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी ➢ यज्ञ मन्त्र संग्रह, शारदा इण्टरप्राइजेज, वाराणसी ➢ पौरोहित्यकर्मप्रशिक्षक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान			
P020202T	**Core**	**चतुर्थ प्रश्नपत्र- संस्कार-अभिज्ञान एवं वेदान्तविद्या** ईकाई 1 – वैदिक संस्कारों का सामान्य परिचय, संस्कारों का मनोवैज्ञानिक स्वरूप, प्राग्जन्म, संस्कारों की आवश्यकता : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, संस्कारों का वैज्ञानिक पक्ष ईकाई 2 – संस्कार परिचय एवं पूजन विधि - अन्तर्गर्भ संस्कार, गर्भाधान संस्कार, पुंसवन संस्कार, सीमन्तोन्नयन संस्कार, बहिर्गर्भ संस्कार, जातकर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण संस्कार ईकाई 3 – संस्कार परिचय एवं पूजन विधि - अन्नप्राशन संस्कार, चूडाकरण (मुण्डन) संस्कार, विद्यारम्भ संस्कार, कर्णवेध संस्कार, यज्ञोपवीत(उपनयन) संस्कार, वेदारम्भ संस्कार, केशान्त संस्कार, समावर्तन संस्कार ईकाई 4 – संस्कार परिचय एवं पूजन विधि - पाणिग्रहण (विवाह) संस्कार, अष्टविध विवाह-ब्राह्म-विवाह, प्राजापत्य-विवाह, दैव-विवाह, आर्ष-विवाह, गान्धर्व-विवाह, आसुर-विवाह, राक्षस-विवाह, पैशाच-विवाह, अन्त्येष्टि संस्कार, गरुड़ पुराण का सामान्य परिचय ईकाई 5 – **वेदान्तविद्या-** भारतीय दर्शन में वेदान्त दर्शन, वेदान्त दर्शन : दार्शनिक पृष्ठभूमि, वेदान्त दर्शन की शाखायें, अद्वैतवेदान्तदर्शन, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन की प्रासङ्गिकता, जीव, जगत् और ब्रह्म का स्वरूप **सहायक ग्रन्थ -** ➢ भारतीय दर्शन की रूपरेखा, हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा ➢ भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, प्रो. संगमलाल पाण्डेय ➢ वेदान्तसार, सदानन्द योगीन्द्र ➢ वेदान्त दर्शन का इतिहास, उदयवीर शास्त्री ➢ मुहूर्तचिन्तामणि, श्रीकृष्णदास प्रकाशन, वाराणसी ➢ ताजिकनीलकण्ठी, सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ➢ लघु-पराशरी- सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी ➢ मध्य पराशरी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी ➢ नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीताप्रेस गोरखपुर ➢ दुर्गार्चन पद्धति, शिवदत्त मिश्र शास्त्री, ज्योतिष प्रकाशन वाराणसी ➢ यज्ञ मन्त्र संग्रह, शारदा इण्टरप्राइजेज, वाराणसी ➢ पौरोहित्यकर्मप्रशिक्षक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान ➢ सरल विवाह-पद्धति, पण्डित दीनबन्धु मिश्र, भारती परिषद् प्रयाग ➢ नित्यकर्मपूजाप्रकाश, गीताप्रेस गोरखपुर	**5**		

		➢ कर्मकाण्डभास्कर, गीताप्रेस, गोरखपुर ➢ गरुड़ पुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर			
P020203R	**Core**	**Project Report and Presentation** **सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची** ➢ पारस्कर गृह्यसूत्र, (सम्पा.) सुधाकर मालवीय, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी ➢ कर्मकौमुदी, डॉ. बृजेश कुमार शुक्ल, नाग प्रकाशक, दिल्ली, 2001 ➢ कर्मठगुरु, मुकुन्द वल्लभ मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2001 ➢ आपस्तम्बीयकर्म मीमांसा, प्रयागनारायण मिश्र, प्रतिभ प्रकाशन, दिल्ली ➢ हिन्दू संस्कार, राजबली पांडे, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1995 ➢ संस्कारप्रकाश, भवानी शङ्कर त्रिवेदी, लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली ➢ पौरोहित्यकर्म प्रशिक्षक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ ➢ नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीताप्रेस गोरखपुर ➢ धर्मशास्त्र का इतिहास, पाण्डुरंग वामन काणे, (अनु.) अर्जुन चौबे कश्यप, प्रथम भाग, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1973	**4**	**100**	**-**